P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11* February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भारत की विदेश नीतिः एक अध्ययन

हरपाल सिंह
प्राध्यापक,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
लूला अहीर, रेवाड़ी,
हरियाणा, भारत

सारांश

विदेश नीति राष्ट्रीय हितों, सिद्धान्तों एवं उद्देश्यों का एक जोड़ है। प्रत्येक देश अन्य देशों के साथ अपने सम्बन्धों को संचालित करने हेतु उनका प्रतिपादन करता है। विदेश नीति के निर्माण एवं संचालन में विविध निर्धारक तत्व, संस्थाएँ प्रणालियाँ एवं व्यक्तित्व कारक भूमिका निभाते है। विदेश नीति एक जटिल प्रक्रिया है इसमें नीतिकार कूटनीतिक साधनों के माध्यम से राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने का प्रयास करते है। वस्तुतः विदेश नीति का लक्ष्य देश के मूल राष्ट्रीय हितों–आंतरिक व बाह्य सुरक्षा को सुनिश्चित करना, आर्थिक विकास को बढ़ावा देना तथा सांस्कृतिक व सामाजिक मूल्यों की रक्षा करना है। विदेश नीति एवं सम्बन्धों का संचालन करना एक कला है जिसमें शिल्पकार अपनी क्षमताओं एवं अनुभव का उपयोग करते हुए अपने वांछित उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है।

भारत की विदेश नीति अन्य देशों की विदेश नीतियों की तरह राष्ट्रीय हितों, सामाजिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भौगोलिक परिस्थितियों एवं मौजूदा अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों द्वारा निर्धारित हुई है, परन्तु विदेश नीति को प्रभावित करने वाले कारक तत्व भिन्न–भिन्न हो सकते है। ऐसा होना स्वाभाविक है, क्योंकि प्रत्येक देश का अपना एक विशिष्ट इतिहास एवं संस्कृति होती है जो विदेश नीति के निर्माण को प्रभावित करती है। इस परिप्रेक्ष्य में भारत की विदेश नीति राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं तत्कालीन अन्तर्राष्ट्रीय वास्तविकता एवं भू–राजनैतिक आवश्यकताओं से बहुत प्रभावित हुई है।

1920–1947 के गाँधी युग ने राष्ट्रीय सोच, राष्ट्र–राज्य के निर्माण एवं बाह्य देशों के साथ सम्बन्धों के स्वरूप एवं शैली को निर्धारित करने में अहम भूमिका निभाई। भारत के लम्बे स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, नाजीवाद, फासीवाद एवं रंगभेद के विरूद्ध सतत संघर्ष ने देश की विदेश नीति के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से प्रभावित किया है।

मार्च, 1947 में जवाहर लाल नेहरू ने एशियाई सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा, ''हम एक ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय माहौल में जी रहे हैं जहाँ बड़ी शक्तियों के बीच सैनिक गुटबाजी एवं शक्ति–प्रतिद्वंद्विता का माहौल है। ऐसी स्थिति में हमें शीतयुद्ध की राजनीति से दूर रहना चाहिये, क्योंकि अपनी आजादी बनाये रखने के लिए यह जरूरी है कि हम स्वतन्त्र नीति का परिपालन करे।'

1947 में देश के स्वतन्त्र होने के बाद प्रधानमन्त्री नेहरू ने असंलग्नता की नीति का प्रतिपादन किया। उन्होंने कहा कि ''हमारी भौगोलिक परिस्थितियाँ हमें एक बड़ी शक्ति के रूप में विश्व–राजनीति में अहम् भूमिका निभाने के लिए बाध्य करती है।'' नेहरू ने विदेश नीति के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा'' हम उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद एवं रंगभेद की नीति का सदैव विरोध करेंगे। हम संयुक्त राष्ट्र संघ के सिद्धान्तों में पूर्ण आस्था एवं विश्वास व्यक्त करते है, इसके साथ विश्व में निःशस्त्रीकरण के लिए सदैव, हर स्तर पर प्रयास करते रहेंगे।''

इस प्रकार भारत ने खेमे की राजनीति से दूर रहने तथा महाशक्तियों द्वारा संचालित सैनिक गठबन्धनों का विरोध करने का निश्चय किया तथा भारत ने पंचशील के सिद्धान्तों के पालन पर विशेष बल दिया।

मुख्य शब्द : राष्ट्रीय हित, विदेश नीति, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, विश्व राजनीति, निर्धारक तत्व।

प्रस्तावना

स्वतंत्रता के बाद से ही भारत ने स्वतंत्र विदेश नीति अपनायी तथा उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद, नस्लवाद तथा अधिनायकतंत्र की आलोचना की। 29 सितम्बर, 1946 को जवाहर लाल नेहरू ने एक प्रेस कान्फ्रेंस में भारतीय विदेश नीति के सिद्धान्तों को स्पष्ट करते हुए कहा था कि– ''भारत का दृष्टिकोण

संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रति पूर्णतया सहयोग का है तथा जो चार्टर इसे संचालित करता है उसका बिना किसी पूर्वाग्रह के पालन करने का है। इस लक्ष्य को सम्मुख रखते हुए भारत विश्व की विभिन्न गतिविधियों में पूर्ण भाग लेना तथा इस रूप में उस भूमिका को निभाने का प्रयत्न करेगा जो इसकी भौगोलिक स्थिति तथा जनसंख्या तथा शान्तिमय प्रगति के लिए इसके योग्य है। भारत सभी उपनिवेशक तथा पराधीन लोगों की स्वतन्त्रता तथा आत्म निर्णय के अधिकार का पूर्ण समर्थन करता है।

विदेश मामलों के क्षेत्र में, भारत की नीति एक दूसरे के विरूद्ध इकठ्टे हुए गुटों की शक्ति राजनीति से दूर रहने, पराधीन व्यक्तियों की स्वतन्त्रता के सिद्धान्त को मानने तथा जहाँ कहीं भी नस्ली भेदभाव होगा उसका विरोध करने की होगी। भारत दूसरे शान्तिप्रिय देशों के साथ मिलकर, एक राष्ट्र द्वारा राष्ट्र के शोषण के बिना अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा सद्भावना के लिए कार्य करेगा। यह आवश्यक है कि अपनी पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति की प्राप्ति के साथ भारत विश्व के सभी महान् राष्ट्रों के साथ सम्बन्ध स्थापित करे तथा एशिया के अपने पड़ोसी राष्ट्रों के साथ सम्बन्धों को और अधिक निकटता प्रदान करे।''

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध विषय ''भारत की विदेश नीतिः एक अध्ययन'' में शोधार्थी ने निम्नलिखित अध्ययन के उद्देश्य बताये है :–

1. विदेश नीति का अर्थ एवं उद्देश्यों को स्पष्ट करना।
2. भारतीय विदेश नीति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
3. भारतीय विदेश नीति के निर्धारक तत्वों की विवेचना करना।
4. भारतीय विदेश नीति की असफलताओं का अध्ययन करना।
5. भारतीय विदेश नीति की उपलब्धियों का अध्ययन करना।
6. 21वीं सदी में भारत के पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धों की व्याख्या करना।
7. भारतीय विदेश नीति को ओर अधिक सफल बनाने के लिए प्रमुख सुझाव देना।

अध्ययन पद्धति

शोध विषय ''भारतीय विदेश नीतिः एक अध्ययन'' की प्रकृति व्यावहारिक की अपेक्षा सैद्धान्तिक अधिक है इसलिए शोधकर्ता ने शोध सामग्री का संकलन करते समय प्राथमिक स्रोतों की अपेक्षा द्वितीयक स्रोतों से अधिक सामग्री संग्रहित की है। शोधकर्ता ने शोध विषय से सम्बन्धित द्वितीयक आंकडें एकत्रित करने के लिए प्रस्तुत विषय पर विभिन्न विद्वानों द्वारा लिखी गई रचनाओं, समाचार–पत्रों तथा विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में पारित प्रस्तावों एवं सम्पन्न समझौतों से सामग्री ली गई है।

साहित्यावलोकन

आर. एस. यादव ने अपनी रचना ''भारत की विदेश नीति'' (2013) में लिखा है कि किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति मुख्य रूप से कुछ सिद्धान्तों, हितों एवं उद्देश्यों का समूह होता है। जिनके माध्यम से वह राष्ट्र दूसरे राष्ट्रो के साथ सम्बन्ध स्थापित करके उन सिद्धान्तों की पूर्ति करने हेतु कार्यरत रहता है।

वी.एन. खन्ना तथा लिपाक्षी अरोड़ा द्वारा लिखित रचना ''भारत की विदेश नीति'' (2007) में लेखकों ने विदेश नीति का उद्देश्य बताये हुए लिखा है कि विदेश नीति के माध्यम से प्रत्येक देश अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा तथा अभिवृद्धि सुनिश्चित करता है। भारत भी अपनी विदेश नीति को अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के सन्दर्भ में निर्धारित और लागू करता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय से ही भारत ने स्वयं को गुटों की राजनीति से पृथक रखा। यह नीति समय की कसौटी पर खरी उतरी। पारस्परिक निर्भरता के युग में भारत सभी देशों के साथ शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व पर आधारित मेत्री को प्रोत्साहित करने वाली विदेश नीति पर चलता आया है।

तपन बिस्वाल की रचना ''अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध'' (2016) में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर भारतीय दृष्टिकोण को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक में शीतयुद्ध के समय से लेकर वर्तमान उत्तर–शीतयुद्ध काल की भारतीय विदेश नीति का चित्रण प्रस्तुत करते हुए भारत के पडोसी देशों के साथ सम्बन्धों तथा विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में भारत की भूमिका की व्याख्या की गई है।

वी.एन. खन्ना एवं लेस्ली के कुमार ने अपनी रचना ''फॉरेन पॉलिसी ऑफ इण्डिया'' (2018) में लिखा है कि भारत की विदेश नीति भी अन्य देशों की नीति की भांति ही राष्ट्रीय हितों से ही निर्धारित होती है। भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से आज तक स्वतन्त्र विदेश नीति का संचालन किया है चाहे वह जलवायु परिवर्तन का मुद्दा हो या फिर शीतयुद्ध का दौर। इस पुस्तक में भारत एवं इजरायल के आतंकवाद से निपटने के तरीकों पर भी चर्चा की गई है साथ ही 21वीं शताब्दी में भारतीय विदेश नीति के लक्ष्यों को भी दर्शाया गया है।

भारतीय विदेश नीति के सिद्धान्त

भारत की विदेश नीति के सिद्धान्तों की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए जवाहरलाल नेहरू ने सितम्बर 1946 में एक प्रेस सम्मेलन में कहा था, ''वैदेशिक सम्बन्धों के क्षेत्र में भारत एक स्वतन्त्र नीति का अनुसरण करेगा और गुटों की खींचतान से दूर रहते हुए संसार के समस्त पराधीन देशों को आत्म–निर्णय का अधिकार प्रदान कराने तथा जातीय भेदभाव की नीति का दृढ़तापूर्वक उन्मूलन कराने का प्रयत्न करेगा। साथ ही वह दुनिया के शान्तिप्रिय राष्ट्रों के साथ मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सद्भावना के प्रसार के लिए भी निरन्तर प्रयत्नशील रहेगा।'' नेहरू का यह कथन आज भी भारत की विदेश नीति का आधार–स्तम्भ है। भारत की विदेश नीति की मूल बातों का समावेश हमारे संविधान के अनुच्छेद 51 में कर दिया गया है, जिसके अनुसार राज्य अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा को बढ़ावा देगा, राज्य राष्ट्रों के मध्य न्याय और सम्मानपूर्वक सम्बन्धो को बनाये रखने का प्रयास करेगा, राज्य अन्तर्राष्ट्रीय कानूनो तथा सन्धियों का सम्मान करेगा तथा राज्य अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को पंच फैसलों द्वारा निपटाने की रीति को बढ़ावा देगा। कुल

मिलाकर भारत की विदेश नीति के प्रमुख आदर्श एवं उद्देश्य या सिद्धान्त निम्नलिखित है :–

1. गुट निरपेक्षता तथा गुट–निरपेक्ष आन्दोलन में विश्वास करना।
2. साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद तथा नव–उपनिवेशवाद का पूर्ण विरोध करना।
3. नस्ली भेद–भाव का दृढ विरोध करना।
4. भेद–भाव पूर्ण तथा प्रभुत्व पैदा करने वाली शासन व्यवस्थाओं का विरोध करना।
5. साधनों की शुद्धता में विश्वास
6. पंचशील का पालन करना

पंचशाील के पाँच सिद्धान्त इस प्रकार है :–

- एक दूसरे की भू–क्षेत्रीय अखण्डता तथा प्रभुसत्ता का पारस्परिक सम्मान
- अनाक्रमण
- एक दूसरे के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप न करना
- परस्पर लाभ तथा समानता
- शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व

7. संयुक्त राष्ट्र संघ तथा विश्व शान्ति के लिए समर्थन देना।
8. तीसरे विश्व, विशेषकर एशिया तथा अफ्रीका के देशों के साथ एकता स्थापित करना।
9. सब के साथ, विशेषकर पड़ोसी देशों के साथ मित्रता और सहयोग की नीति अपनाना
10. भारत के राष्ट्रीय हितों पर आधारित स्वतन्त्र विदेश नीति को अपनाना।
11. निःशस्त्रीकरण विशेषकर परमाणु निःशस्त्रीकरण तथा शस्त्र–नियंत्रण का समर्थन करना।
12. स्वतन्त्र परमाणु नीति का अनुसरण करना।
13. अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद का पूर्ण एवं सशक्त विरोध करना।

भारतीय विदेश नीति के विभिन्न चरण

नेहरू युग

भारतीय विदेश नीति का प्रारम्भ नेहरू युग से होता है। नेहरू ही विदेश नीति के मूल निर्माता और निर्धारक थे। विदेश मंत्रालय का कार्यभार नेहरू ही देखते थे।

स्वतन्त्र विदेश नीति

नेहरू के द्वारा स्वतन्त्र विदेश नीति पर बल प्रदान किया गया तथा उन्होंने प्रत्येक देश के साथ अपने सम्बन्ध बेहतर करने का प्रयत्न किया। शीतयुद्ध के दौरान सैन्य गुटों के संघर्ष से अलग गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई। नेहरू ने शस्त्रों की होड़ को त्याग कर आर्थिक विकास पर बल दिया।

आर्थिक विकास की नीति

नेहरू के द्वारा देश के औद्योगिकीकरण पर मुख्य बल दिया गया, जिससे भारत का विकास आधुनिक समाज के अनुरूप किया जा सके। उन्होंने देश के आर्थिक विकास पर बल दिया एवं सार्वजनिक उद्यमों की प्राथमिकता को स्वीकार किया। स्वतन्त्रता के समय भारत आर्थिक रूप से पिछड़ा था, क्षेत्रीय विषमताएं विद्यमान थीं, इसलिए घरेलू आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए भारत ने अमेरिका एवं सोवियत संघ दोनों से आर्थिक एवं तकनीकी सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न किया।

एशियाई अफ्रीकी देशों की एकता की नीति

सन् 1948 में नई दिल्ली में एशियाई सम्बन्धों की बैठक हुई तथा सन् 1955 में बांडुंग सम्मेलन आयोजित किया गया। उनके अनुसार एशियाई अफ्रीकी देश उपनिवेश से स्वतन्त्र हुए है। इसलिए उनके हित एक समान है। नेहरू एशियाई अफ्रीकी देशों की एकता के द्वारा समता मूलक विश्व के निर्माण पर बल दिया। इसी क्रम में नेहरू ने चीन से बेहतर सम्बन्ध बनाने का प्रयत्न किया। भारत के द्वारा समूचे विश्व से साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद समाप्त करने का प्रयत्न किया गया।

चीन के साथ बेहतर सम्बन्ध कायम करना

एशियाई एकता के लिए चीन के साथ बेहतर सम्बन्ध बनाना आवश्यक था क्योंकि चीन, भारत का पड़ोसी था, परन्तु चीन साम्यवादी सैनिक संगठन का सदस्य था। चूकिं स्वतन्त्रता के बाद पाकिस्तान का दृष्टिकोण भारत के प्रतिकुल था इसलिए चीन के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध भारत के लिए आवश्यक था। क्योंकि पड़ोस में स्थित दोनों देशों के साथ प्रतिकुल सम्बन्ध भारत के हितों के विरूद्ध थे।

गुटनिरपेक्ष नीति

गुटनिरपेक्ष आंदोलन दुनिया में तीसरे गुट का निर्माण नहीं वरन् दुनिया से गुट की समाप्ति करने का एक मंच था। गुटनिरपेक्षता का अभिप्राय, अमेरिका और सोवियत संघ का विरोध नहीं, बल्कि विश्व में विद्यमान सैनिक गुटों का विरोध था और भारत के अनुसार सैनिक गुटों का पिछलग्गू बनना स्वतन्त्र विदेश नीति के विरूद्ध था। वर्तमान में इसी स्वतन्त्र विदेश नीति को सामरिक स्वायत्तता का नाम दिया जा रहा है।

संयुक्त राष्ट्र संघ को शक्तिशाली बनाने पर बल

नेहरू ने सदैव संयुक्त राष्ट्र संघ को प्रभावशाली बनाने की रणनीति अपनाई। संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा विश्व में शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व पर बल दिया गया। विश्व में विद्यमान विवादों के शान्तिपूर्ण समाधान पर अत्यधिक बल दिया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ के आदर्शों के अनुरूप भारत में विदेश नीति के मूल सिद्धान्तों का निर्माण किया गया।

तीसरी दुनिया का नेतृत्व करने की नीति

नेहरू ने तृतीय विश्व के नेतृत्व की नीति अपनाई। भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष केवल भारत की स्वतन्त्रता की लड़ाई नहीं था, बल्कि इसके द्वारा समूचे विश्व से साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद समाप्त करने का प्रयत्न किया गया। इसलिए स्वतन्त्रता के बाद सन् 1948 में नई दिल्ली में एशियाई सम्बन्धों की बैठक आयोजित की गई तथा सन् 1955 में बांडुंग में एशियाई अफ्रीकी सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें भारत की भूमिका केन्द्रीय थी।

भारतीय विदेश नीति में नेहरू के द्वारा शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व, परमाणु हथियारों का विरोध तथा संयुक्त राष्ट्र को प्रभावशाली बनाने का नारा दिया गया। इसलिए नेहरू की विदेश नीति आदर्शवादी कही जाती है। उन्होंने हथियारों के संग्रह तथा सुरक्षा के बजाय, शान्ति स्थापना

पर बल दिया। उनके अनुसार भारत का सामाजिक एवं आर्थिक विकास सबसे बड़ी प्राथमिकता थी। उन्होंने परमाणु क्षमता के शान्तिपूर्ण प्रयोग का समर्थन किया, एशिया एवं समूचे विश्व में शान्ति स्थापना का प्रयत्न किया तथा न्यायपूर्ण विश्व के निर्माण की माँग की। नेहरू की इस आदर्शवादी सोच का आधार राष्ट्रीय आन्दोलन के आदर्श थे, जिसमें साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद का विरोध किया गया था।

भारत के द्वारा तीसरी दुनिया का नेतृत्व किया गया, परन्तु सन् 1962 में चीन के द्वारा भारत पर आक्रमण किया गया, जिसे नेहरू की विदेश नीति की असफलता कहा गया। सन् 1964 में चीन के द्वारा परमाणु परीक्षण किया गया, जिससे भारत की सुरक्षा के लिए गम्भीर चुनौती उत्पन्न हो गयी। सन् 1964 में ही नेहरू की मृत्यु हो गयी और लाल बहादुर शास्त्री देश के नए प्रधानमन्त्री हुए। सन् 1965 में भारत पाकिस्तान के बीच युद्ध हुआ और सन् 1966 में ताशकन्द समझौते (उज्बेकिस्तान) के दौरान लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु हो गयी और परिणामस्वरूप इन्दिरा गाँधी भारत की प्रधानमन्त्री बनीं तथा क्षेत्रीय और वैश्विक परिस्थतियां भी बदल गई, जिसके बाद भारतीय विदेश नीति में गुणात्मक परिवर्तन हुआ।

भारतीय विदेश नीति का द्वितीय चरण

इस दौरान विदेश नीति में सुरक्षा एवं सैन्य सामग्री के भण्डारण पर विशेष बल दिया गया, क्योंकि पाकिस्तान और चीन दोनों पड़ोसी देश भारत के विरोधी हो गए। भारतीय सेना के आकार में भारी वृद्धि की गयी एवं सैन्य आधुनिकीकरण पर बल दिया गया। सन् 1965 के बाद अमेरिका के द्वारा भारत के लिए हथियार निर्यात को प्रतिबंधित कर दिया गया। सन् 1971 में अमेरिका और चीन के बीच कूटनीतिक सम्बन्धों की स्थापना हुई, जिससे भारत ने सन् 1971 में भारत एवं सोवियत संघ के मध्य शान्ति और मित्रता की सन्धि हुई, जिसमें यथार्थवाद साफ तौर पर दिखता है। कई विचारकों ने तो यहाँ तक कहा कि अब भारत, गुटनिरपेक्षता के बजाय, गुटों में शामिल हो गया है। यद्यपि कुछ विचारकों ने इसे गुटनिरपेक्षता का उल्लंघन नहीं माना क्योंकि, यह सन्धि शान्ति और मित्रता की थी, सैन्य गठबन्धन की नहीं। सन् 1974 में भारत के द्वारा शन्तिपूर्ण परमाणु विस्फोट किया गया , जिससे भारत ने यह प्रदर्शित किया कि वह परमाणु हथियार बना सकता है। सन् 1971 में भारत के द्वारा पाकिस्तान को पराजित किया गया और पड़ोसी देशों ने भारत की सैनिक क्षमता को स्वीकार किया। सन् 1975 में सिक्किम का भारत में विलय हो गया। अतः भारत के द्वारा सुरक्षा एवं शक्ति पर बल दिया गया। अब भारत ने सोवियत संघ से बड़ी मात्रा में हथियारों की खरीददारी करना प्रारम्भ किया। इसी दौरान भारतीय विदेश नीति में अमेरिका और पश्चिम का विरोध भी किया गया। इन्दिरा गाँधी के कार्यकाल के दौरान भारतीय विदेश नीति में यथार्थवाद का प्रभावी विकास हुआ, परन्तु इस परिवर्तन के बावजूद भारतीय विदेश नीति में आदर्शवादी तत्व निरन्तर बने रहें, क्योंकि इन्दिरा गाँधी ने भी गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को प्रभावी बल प्रदान किया। उन्होंने साम्रज्यवादी, उपनिवेशवाद विरोधी नीति को आगे बढ़ाया साथ ही साथ निःशस्त्रीकरण का जोरदार समर्थन किया। इन्दिरा गाँधी ने हिन्द महासागर एवं दक्षिण एशिया में महाशिक्तियों के हस्तक्षेप का विरोध किया।

जनता पार्टी (1977–1980)

प्रधानमन्त्री मोरारजी देसाई ने अमेरिका के साथ बेहतर सम्बन्ध बनाने पर विशेष बल दिया और जनता के सामने जनता पार्टी ने यह बताने का प्रयत्न किया कि भारतीय विदेश नीति का झुकाव सोवियत संघ की ओर अधिक है इसे संतुलित करने की आवश्यकता है इसलिए उन्होंने अमेरिका के साथ सम्बन्धों पर प्रभावी बल दिया। इसी का परिणाम था कि जनवरी, 1978 में अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कॉर्टर भारत की यात्रा पर आए, जो सन् 1959 में राष्ट्रपति ऑइजन हॉवर की भारत यात्रा के बाद किसी अमेरिकी राष्ट्रपति की पहली भारत यात्रा थी तथा स्वयं मोराजी देसाई द्वारा भी सन् 1978 में अमेरिका की यात्रा की गई। जनता पार्टी सरकार के विदेश मन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा इसी समय चीन की यात्रा की गयी, परन्तु चीन के वियतनाम आक्रमण के कारण वे तुरन्त वापस लौट आए व चीन के साथ सम्बन्धों को सामान्य करने का प्रयत्न भी असफल रहा। जनता पार्टी सरकार अमेरिका के साथ सुदृढ़ सम्बन्धों का विकास नहीं कर सकी, क्योंकि सन् 1979 में सोवियत संघ की सेनाओं ने अफगानिस्तान में हस्तक्षेप किया। सोवियत संघ के इस हस्तक्षेप के विरोध में अमेरिका ने पाकिस्तान का प्रयोग किया। अमेरिका एवं पाकिस्तान की बढ़ती मित्रता के कारण भारत अमेरिका संम्बन्धों में लगातार दूरी बनती गयी। अतः शासन के परिवर्तन के बावजूद भारतीय विदेश नीति में कोई आमूल–चूल परिवर्तन नहीं हुआ।

कांग्रेस की वापसी (1980–1989)

सन् 1980 में इन्दिरा गाँधी पुनः प्रधानमन्त्री बनीं तथा देश के आर्थिक विकास पर बल दिया। उन्होंने सोवियत संघ के साथ मित्रता को प्रभावी बनाया एवं दक्षिण एशिया तथा हिन्द महासागर के क्षेत्र को महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा से दूर रखने की नीति अपनाई। विदेश नीति में अमेरिकी विरोध व पश्चिम विरोध लगातार बना रहा। सन् 1974 में नव–अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था' (NIEO) की माँग की गई।

प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी ने तकनीकी और आर्थिक विकास पर बल दिया तथा उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था को उदारीकृत करने का भी प्रयत्न किया। उन्होनें अमेरिका से तकनीकी, विशेषकर कम्प्यूटर तकनीकी और जापान के ऑटोमोबाईल उद्योग को भारत लाने का प्रयत्न किया। राजीव गाँधी की विदेश नीति की सबसे बड़ी पहल सन् 1988 में चीन की यात्रा थी, जिसके अन्तर्गत उन्होंने चीन के साथ सम्बन्धों को सामान्य बनाने का प्रयत्न किया। राजीव गाँधी ने भारत की विदेश नीति के आदर्शवादी तत्वों को नहीं छोड़ा और सन् 1988 में उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में भाषण देते हुए कहा, कि पूरी दुनिया से 20 वर्षों की निश्चित समय सीमा के भीतर परमाणु हथियारों को समाप्त कर दिया जाना चाहिए। गाँधी के कार्यकाल के दौरान भारत के उसके पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध अत्यधिक प्रतिकुल रहे। भारत एवं नेपाल

के बीच पारगमन मार्ग को लेकर विवाद उत्पन्न हुआ। राजीव गाँधी ने हिन्द महासागर क्षेत्र में महाशक्तियों की उपस्थिति का विरोध किया।

सन् 1990 के बाद भारत की स्थिति

सन् 1990 में सोवियत संघ का विघटन हो गया तथा रूस, सोवियत संघ का उत्तराधिकारी बना। विश्व राजनीति में वैचारिक संघर्ष एवं शीतयुद्ध की समाप्ति हुई साथ ही अमेरिका और रूस के मध्य बेहतर सम्बन्धों की स्थापना हुई। दुनिया में वैश्वीकरण एवं उदारीकरण का प्रभाव बढ़ा, जिससे क्षेत्रीय आर्थिक संगठनों का विकास हुआ और विश्व एकध्रुवीय बन गया, जिसे कुछ लोगों ने ध्रुवविहीन विश्व का भी नाम दिया। अमेरिका, एकध्रुवीय विश्व का नियंत्रणकर्ता बन गया है। सन् 1990 के पहले भारत का सबसे बड़ा द्विपक्षीय व्यापार सोवियत संघ के साथ था। सोवियत संघ के विघटन से आयात और निर्यात का संकट उत्पन्न हो गया, क्योंकि सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था धराशाही हो गयी। इसलिए सन् 1990 के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था संकटग्रस्त हो गयी और भारत की आर्थिक विकास दर एक प्रतिशत तक सीमित हो गई। देश की आर्थिक साख दांव पर लग गई एवं देश के लोकतन्त्र के इतिहास में पहली बार सन् 1989 में वी.पी सिंह के नेतृत्व में राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार का निर्माण हुआ, जिसका लोक सभा में पूर्ण बहुमत नहीं था जो भारतीय जनता पार्टी और साम्यवादी दलों के बाहरी समर्थन पर निर्भर थी। भारत में सरकार अस्थायी हो गयीं, क्योंकि सरकार अनेक दलों के समर्थन पर आधारित थी। सन् 1991 में पुनः लोक सभा चुनाव हुए और नरसिम्हा राव की अल्पमत सरकार का निर्माण हुआ। भारत विदेशी वस्तुओं के आयात के लिए विदेशी मुद्रा का भुगतान करने में अक्षम हो गया और भारत के समक्ष भुगतान के सन्तुलन का संकट उत्पन्न हो गया।

शीतयुद्ध के बाद विदेश नीति में परिवर्तन

स्वतन्त्रता के बाद पहली बार भारतीय विदेश नीति में गुणात्मक परिवर्तन हुआ और नेहरू द्वारा निर्मित समाजवाद और गुटनिरपेक्ष विदेश नीति में परिवर्तन किया गया तथा विचारधारा के बजाय राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता प्रदान की गई, जिसे व्यावहारिक विदेश नीति भी कहा जाता है। प्रधानमन्त्री नरसिम्हा राव और वित्तमन्त्री मानमोहन सिंह ने भारतीय आर्थिक नीति में भारी परिवर्तन किया और उदारीकरण की नीति अपनाई तथा सार्वजनिक उद्यमों की प्राथमिकता के सिद्धान्त का परित्याग कर दिया गया एवं उदारीकरण और भूमण्डलीकरण के युग में व्यापार, निवेश एवं वाणिज्य पर बल दिया गया। विदेश नीति में अमेरिका के साथ सम्बन्ध बनाने पर बल दिया गया, क्योंकि शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद अमेरिका विश्व की एकमात्र महाशक्ति बनकर उभरा। इसलिए अमेरिका के साथ सम्बन्ध भारत के लिए विकल्प न होकर वरन् एक अनिवार्य आवश्यकता थी। अमेरिका के कारण भारत को 'अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष' से बड़ी मात्रा में आर्थिक सहायता प्रदान की गयी, जिससे भारत का आर्थिक संकट समाप्त हुआ। वर्ष–1992 में भारतीय विदेश नीति में 'पूर्व की ओर देखो' की नीति को अपनाया गया और आसियान देशों के साथ आर्थिक सम्बन्धों को अत्यधिक सुदृढ़ करने पर बल दिया गया, क्योंकि ये क्षेत्र आर्थिक विकास के प्रभावी केन्द्र के रूप में उभर रहे थे। शीतयुद्ध के बाद भारतीय विदेश नीति में सक्रिय यथार्थवाद देखा गया। उदाहरण के लिए भारत ने म्यांमार के सैन्य शासन से भी मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित किये।

नरसिम्हा राव सरकार ने चीन के साथ सम्बन्धों को सुधारने पर विशेष बल दिया। भारतीय विदेश नीति में आर्थिक तत्व प्रभावी बन कर उभरे और भारत के द्वारा 'दक्षेस' (SARC) को आर्थिक रूप से प्रभावी बनाने पर बल दिया गया। सन् 1992 में भारत ने इजरायल के साथ कूटनीतिक सम्बन्धों की स्थापना की, जो विदेश नीति में बड़ा परिवर्तन था सन् 1992 के पहले भारत ने फिलीस्तीन के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्धों का निर्माण किया था और फिलीस्तीन के समर्थन के कारण इजरायल के साथ कूटनीति सम्बन्ध स्थाापित नहीं किए थे। अतः विदेश नीति में व्यावहारिकता और मध्यम मार्ग पर बल दिया गया। यूरोपीय यूनियन के साथ आर्थिक सम्बन्धों के विकास पर बल दिया गया तथा विदेश नीति में निवेश, व्यापार एवं निर्यात को केन्द्रीय महत्व प्रदान किया गया। अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के साथ आर्थिक और व्यापारिक सम्बन्धों पर भी बल प्रदान दिया गया।

गुजराल सिद्धान्त (1996)

सन् 1990 के बाद भारतीय विदेश नीति में पड़ोसी देशों के प्रति बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ तथा इस नीति को गुजराल सिद्धान्त कहते है, क्योंकि सन् 1996 में इन्द्रकुमार गुजराल विदेश मन्त्री थे, उन्होंने पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध बनाने में पारस्परिकता की मान्यता को परिवर्तित किया और पड़ोसी देशों को एकतरफा छूट देने की रणनीति अपनाई, लेकिन चीन एवं पाकिस्तान को एकतरफा छूट नहीं मिलेगी, क्योंकि एकतरफा छूट की नीति केवल छोटे पड़ोसी देशों के प्रति थी। गुजराल सिद्धान्त में पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध बेहतर करने पर बल दिया गया और एक दूसरे की सम्प्रभुता के सम्मान का आश्वासन दिया गया। यह भी निर्णय किया गया कि एक राज्य, दूसरे के विरूद्ध कार्य नहीं करेगें। गुजराल सिद्धान्त के अनुसार यह भी कहा गया कि दक्षिण एशिया का कोई भी देश अपने भू–भाग का इस्तेमाल किसी दूसरे देश के विरूद्ध नहीं होने देगा।

वाजपेयी का कार्यकाल (सन् 1998 से 2004)

सन् 1998 में भारत के द्वारा पोखरण परमाणु परीक्षण किया गया। भारत ने इस परमाणु परीक्षण का उद्देश्य निर्धारित करते हुए कहा कि यह न्यूनतम परमाणु प्रतिरोधक क्षमता के विकास के लिए है। अतः भारत का यह परमाणु परीक्षण सन् 1974 के परमाणु परीक्षण से भिन्न था, क्योंकि इससे परमाणु हथियारों के विकास का लक्ष्य निर्धारित किया गया, क्योंकि पाकिस्तान ने चीन की सहायता से परमाणु हथियारों का विकास कर लिया था। विचारकों के अनुसार, भारत ने एक महाशक्ति के दर्जे का दावा प्रस्तुत किया, क्योंकि परमाणु परीक्षण के साथ ही भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की स्थाई सदस्यता का भी दावा प्रस्तुत कर दिया।

सितम्बर, 2001 के बाद भारतीय विदेश नीति में 'आतंक के विरूद्ध युद्ध' में अमेरिका के सहयोग का निर्णय

किया गया। भारत ने पूरी दुनिया को यह बताने का प्रयत्न किया कि भारत विगत् दो दशकों से सीमापार आतंकवाद से प्रभावित है। अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में पाकिस्तान के साथ सम्बन्धों को मधुर बनाने के लिए 'लाहौर घोषणा–पत्र (1999)' एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। वाजपेयी के कार्यकाल में अमेरिका के साथ सम्बन्धों को बढ़ाने पर महत्वपूर्ण बल दिया गया। इसी सम्बन्ध में वाजपेयी तथा क्लिंटन के मध्य सन् 2000 में 'भारत एवं अमेरिका सम्बन्ध 21वीं शताब्दी की दृष्टि का घोषणा–पत्र' (India-US Relations: A Vision for the 21st Century) नामक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। वाजपेयी कार्यकाल के दौरान सन् 2000 में रूसी राष्ट्रपति पुतिन की भारत यात्रा के दौरान भारत और रूस के मध्य रक्षा सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

भारत का एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभार तथा भारत द्वारा विविधांगीय विदेश नीति को अपनाया गया, जिसका अभिप्राय है कि भारत के द्वारा सभी देशों के साथ राष्ट्रीय हितों के आधार पर सम्बन्ध निर्मित करने पर बल दिया गया। ईरान और इजरायल एक दूसरे के विरोधी है परन्तु भारत के द्वारा दोनों के साथ समानांतर सम्बन्धों का विकास किया गया। सऊदी अरब के साथ सामरिक सम्बन्धों के निर्माण की पहल अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि परंपरागत रूप में सऊदी अरब, पाकिस्तान का समर्थन करने वाला देश रहा है। सऊदी अरब और ईरान के बीच अत्यधिक कटु सम्बन्ध है, परन्तु भारत के द्वारा दोनों के साथ अलग–अगल सम्बन्धों का विकास किया गया है।

भारतीय विदेश नीति में यह यथार्थवाद का परिचायक है, क्योंकि भारत एक तरफ रूस से हथियारों की खरीद कर रहा है, तो दूसरी तरफ इजरायल भारत की रक्षा आपूर्ति करने वाले दूसरे सबसे बड़े देश के रूप में उभर चुका है। भारत के द्वारा अमेरिका और फ्रांस के साथ भी रक्षा हथियारों की खरीद की जा रही है। समूह–20 में अमेरिका, जर्मनी, जापान जैसे विकसित देश शामिल हैं तथा भारत, चीन, एवं ब्राजील जैसे विकासशील देश भी शामिल है। भारत, समूह–8 (जी–8) की बैठकों में भी भागीदारी करता है। समूह–8 में अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैण्ड, इटली, जापान और रूस शामिल है तथा भारत समूह 8+5 (जी–8+5) का भी सदस्य है। समूह–8+5 में चीन, भारत ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और मैक्सिको सम्मिलित है। यह भी उल्लेखनीय है कि विश्व शक्ति का केन्द्र एशियाई प्रशांत क्षेत्र बन कर उभर रहा है।

भारत और तीसरी दुनिया

भारत आज भी दक्षिण–दक्षिण एकता पर प्रभावी बल दे रहा है। भारत, विकासशील देशों के साथ मिलकर विकसित देशों द्वारा संचालित भेदभाव की नीतियों का विरोध कर रहा है। सन् 2003 में इब्सा की स्थापना हुई, जिसमें भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका सम्मिलित है। सन् 2009 में ब्रिक्स की स्थापना भारत के बहुपक्षीय कूटनय का प्रमाण है। ब्रिक्स में ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका सदस्य है। आज भी पर्यावरण के मुद्दे पर, विश्व व्यापार संगठन की वार्ताओं (दोहा) के मुद्दों पर भारत के हित विकासशील देशों के हितों के समान है।

मनमोहन सिंह का कार्यकाल (सन् 2004 से 2014)

सन् 2004 में डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में बनी यू.पी.ए सरकार ने भी एन0डी0ए0 की विदेश नीति को आगे बढ़ाया। सन् 2005 में सुदूरवर्ती पड़ोसी नीति के अंतर्गत् दक्षिण–पूर्व एशिया एवं पश्चिम एशिया के साथ संबंध बनाने पर बल दिया गया। सन् 2005 में पश्चिम की ओर देखो नीति अपनाई गई। सन् 2008 के बाद विश्व में व्याप्त आर्थिक मंदी से भारतीय अर्थव्यवस्था और विदेश नीति प्रभावित हुई। भारत ने इस बिन्दु पर बल दिया , कि विश्व अर्थव्यवस्था के प्रबंध में विकासशील देशों की भूमिका में वृद्धि होनी चाहिए। भारत ने भू–मंडलीकरण को सर्वसमावेशी बनाने पर बल दिया तथा भारत अभी भी वर्तमान विश्व अर्थव्यवस्था प्रणाली में सुधार की माँग कर रहा है। सन् 2010 में सुरक्षा परिषद् के सभी पाँचों स्थाई सदस्य राष्ट्र के राष्ट्राध्यक्षों ने भारत की यात्रा की, जिसमें अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा की यात्रा अत्यधिक उल्लेखनीय है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने पहली बार संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की स्थाई सदस्यता हेतु भारत का समर्थन किया और कहा कि भारत, एक महाशक्ति के रूप में उभर चुका है। अमेरिका सहित अन्य देशों ने सीमापार आतंकवाद के मुद्दे पर भारत के पक्ष का समर्थन किया।

18 जुलाई 2006 को भारत और अमेरिका के मध्य सिविल परमाणु समझौता हुआ, जो भारत और अमेरिका के मध्य बढ़ते सामरिक संबंधों का परिणाम था क्योंकि यह दोनों देशों के मध्य ऊर्जा मात्र का समझौता न होकर वरन् यह दोनों के मध्य सामरिक संबंधों को शक्तिशाली बनाना है, क्योंकि इस समझौते से भारत को समूचे विश्व में उत्तरदायी राज्य का दर्जा प्राप्त हो गया और भारत, विश्व का एकमात्र ऐसा देश हो गया है, जिसने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं किया है, फिर भी उसे परमाणु तकनीकी और परमाणु ईंधन प्राप्त हो रहे है।

भारतीय विदेश नीति में एक तरफ अमेरिका के साथ संबंधों को प्रगाढ़ बनाया जा रहा है तो दूसरी ओर, चीन के उभार से दक्षिण एशिया और विश्व राजनीति में बड़ा परिवर्तन हो रहा है। विदेश नीति में पड़ोसी का कोई विकल्प नहीं होता। इसलिए चीन के साथ संबंध बेहतर करना, भारतीय विदेश नीति के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है। चीन के शक्तिशाली उभार के परिणामस्वरूप भारत अपनी रक्षा तैयारियों को और बेहतर बना रहा है। दूसरी तरफ, चीन के साथ व्यापारिक और आर्थिक संबंधों पर भी बल दिया जा रहा है। इसलिए भारत–अमेरिका और भारत–जापान के बढ़ते संबंध चीन के विरूद्ध नहीं है। भारत के हित चीन में अमेरिका और जापान के हित से अलग है। इसलिए चीन के प्रति भारत को स्वतंत्र नीति का निर्माण करना चाहिए। चीन के प्रति भारतीय विदेश नीति अमेरिका निर्देशित नहीं है, न ही होनी चाहिए। भारत द्वारा वर्ष 2012 में मध्य एशिया देशों को जोड़ने की नीति की घोषण की गई।

नरेन्द्र मोदी की विदेश नीति

सन् 1996 से मई 2014 तक संघ में गठबंधन सरकारों का निर्माण हुआ, जिससे विदेश नीति के निर्माण में क्षेत्रीय दलों की भूमिका प्राथमिक हो गई। गठबंधन सरकार में सहयोगी दलों के दबाव के कारण सरकार के द्वारा त्वरित निर्णय नहीं लिए जा सके। 16वीं लोक सभा चुनाव (मई, 2014) में पहली बार सन् 1984 के बाद संघ में किसी एक दल के नेतृत्व में सरकार का निर्माण हुआ और पहली बार भारतीय जनता पार्टी को लोकसभा में पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ, जिसका प्रभाव विदेश नीति में स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है। लोक सभा में पूर्ण बहुमत के कारण शक्तिशाली प्रधानमंत्री का निर्माण हुआ है, जिससे विदेश नीति के निर्णय शीघ्रता से लिए जा रहे है। सरकार के इस कार्यकाल में प्रधानमंत्री के द्वारा कनाडा की यात्रा की गई। 28 वर्षों बाद भारत के प्रधानमंत्री की श्रीलंका यात्रा हुई तथा 17 वर्षों बाद प्रधानमंत्री के द्वारा नेपाल की यात्रा की गई। नरेन्द्र मोदी की विदेश नीति की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

पहले पड़ोस की नीति

पहली बार किसी भारतीय प्रधानमंत्री के द्वारा अपने शपथ ग्रहण समारोह में दक्षेस के सभी सदस्यों को आमंत्रित किया गया। प्रधानमंत्री की पहली विदेश यात्रा भारत के सबसे छोटे पड़ोसी देश भूटान के लिए निर्धारित की गई। प्रधानमंत्री के द्वारा अपने कार्यकाल के पहले ही वर्ष में नेपाल, श्रीलंका एवं बांग्लादेश की यात्राएं की गई और बांग्लादेश के साथ अत्यधिक महत्वपूर्ण अन्तः क्षेत्रों के लेन–देन का समझौता किया गया, जो सन् 1974 से लंबित था। सर्वप्रथम पड़ोस की नीति सन् 1996 में गुजराल सिद्धांत के द्वारा निर्मित की गई थी, परंतु वर्तमान प्रधानमंत्री ने इसे प्रभावी रूप में लागू करने का प्रयत्न किया।

आर्थिक विकास

भारत को विनिर्माण का केन्द्र बनाने के लिए सरकार के द्वारा 'मेक इन इंडिया' का नारा दिया गया तथा भारत को विश्व के निवेश केन्द्र के रूप में विकसित करने का प्रयत्न किया गया। जापान की यात्रा से भारत में 35 बिलियन डॉलर निवेश आकर्षित किया गया तथा चीन के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान 20 बिलियन डॉलर के निवेश की घोषणा की गयी। अमेरिका से भी भारी निवेश आकर्षित करने की योजना बनाई गई है तथा भारत को व्यापार के लिए सरल और सुविधाजनक देश के रूप में निर्मित किया जा रहा है और वर्तमान में भारत को निवेश के लिए एक बेहतर विकल्प माना जा रहा है।

सांस्कृतिक कूटनीति

सांस्कृतिक कूटनीति के द्वारा सरकार ने भारत के वैचारिक शक्ति को विस्तारित करने का प्रयत्न किया है तथा इसके द्वारा लोगों के बीच संबंधों को बढ़ाया जा रहा है। प्रधानामंत्री ने जापान की यात्रा के लिए क्योटो शहर का चुनाव किया और वाराणसी तथा क्योटो के बीच बौद्ध धर्म के सांस्कृतिक सम्बन्धों पर बल दिया। प्रधानमंत्री के द्वारा म्यांमार यात्रा के दौरान भी सांस्कृतिक संबंधों के द्वारा आर्थिक एवं व्यापारिक संबंधों को सुदृढ़ किया गया। भारत में पहली बार योग दिवस के कार्यक्रम आयोजित हुए, जो भारत के साफ्ट पॉवर को बढ़ाने में सहायक है।

पूर्व में काम करो की नीति

'पूर्व की ओर देखो' की नीति भारत के द्वारा सन् 1992 में अपनाई गई, परंतु इसके व्यावहारिक क्रियान्वयन में अनेक प्रकार की बाधाएं बनी हुई है। इसलिए आधारभूत संरचना के बेहतर विकास के द्वारा आसियान देशों के साथ संबंधों को सुदृढ़ करने पर बल दिया जा रहा है तथा दक्षिण कोरिया एवं जापान जैसे पूर्व में स्थित देशों के साथ संबंधों को बेहतर करने की रणनीति अपनाई जा रही है। इसलिए 'लुक ईस्ट' (पूर्व की ओर देखो) की जगह पर 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' (पूर्व में काम करो की नीति) की जरूरत पर जोर दिया जा रहा है।

प्रवासियों को जोड़ने पर बल

वर्तमान सरकार की विदेश नीति में परिवर्तन गुणात्मक नहीं है, बल्कि शैली का ज्यादा है। भारत के द्वारा डायस्पोरा को भारत से जोड़ने की नीति की शुरूआत वर्ष 1998 के बाद आरंभ हुई, परंतु वर्तमान सरकार के द्वारा पहली बार सीधे डायस्पोरा से भावनात्मक जुड़ाव स्थापित करने का प्रयत्न किया गया। प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका यात्रा के दौरान भारतीय मूल के अमेरिकी लोगों को प्रधानमंत्री के द्वारा सार्वजनिक रूप में संबोधित किया गया। प्रधानमंत्री की आस्ट्रेलिया यात्रा के दौरान भी भारतीय मूल के लोगों के लिए सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। डायस्पोरा के साथ बेहतर संबंध भारत के 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम को सफल बना सकते हैं तथा भारत में बड़ी मात्रा में निवेश आकर्षित किया जा सकता है।

सुरक्षा

आर्थिक विकास के साथ सुरक्षा मुद्दा भी विदेश नीति की बड़ी प्राथमिकता है। सरकार के द्वारा उत्तरी–पूर्वी राज्यों के विकास पर मुख्य बल दिया जा रहा है तथा मणिपुर में आतंकी घटनाओं में शामिल आतंकवादियों को समाप्त करने के लिए म्यांमार की सीमा के भीतर सैनिक कार्यवाही की गई। भारत में रक्षा सामग्री के उत्पादन में आत्मनिर्भरता के लिए रक्षा क्षेत्र में रक्षा सामग्री के उत्पादन में आत्मनिर्भरता के लिए रक्षा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सीमा बढ़ाकर 49 प्रतिशत कर दी गई है। चीन के साथ व्यापारिक संबंधों को बढ़ाया जा रहा है तथा चीन का भारत में निवेश भी आकर्षित किया जा रहा है, परन्तु रक्षा आधुनिकीकरण पर भी समान बल दिया जा रहा है। हिन्द महासागर में भारत की सामरिक पहुंच को बेहतर करने के लिए पहली बार किसी भारतीय प्रधानमन्त्री के द्वारा हिन्द महासागरीय देशों की पृथक् यात्रा की गई और प्रधानमन्त्री के द्वारा श्रीलंका, सेशेल्स एवं मॉरिशस की यात्रा की गई।

वर्तमान सरकार की विदेश नीति में अनेक उपलब्धियां हैं, परन्तु भारत के प्रभावी आर्थिक विकास के बिना निवेश आकर्षित करना अत्यधिक कठिन है। पाकिस्तान के साथ भारत के सम्बन्ध अभी भी तनावपूर्ण बने हुए है, जिसे बेहतर करना सरकार के लिए बड़ी चुनौती है और चीन के शक्तिशाली उभार का सामना करने के लिए भारत को दीर्घकालिक विकास की रणनीति

अपनानी होगी। डायस्पोरा के साथ निर्मित भावनात्मक सम्बन्धों को आर्थिक सम्बन्धों में परिवर्तित करना एक बड़ी चुनौती है। वर्तमान सरकार की विदेश नीति में परिवर्तन स्पष्ट रूप में दिखाई देता है, परन्तु विदेश नीति में होने वाला यह परिवर्तन गुणात्मक नहीं, बल्कि मात्रात्मक है। अतः विदेश नीति के मूल तत्व में परिवर्तन नहीं है, बल्कि विदेश नीति की शैली में परिवर्तन ज्यादा प्रतीत होता है तथा विदेश नीति में मूल परिवर्तन वर्ष–1991 के बाद देखे गए।

विदेश नीति की आलोचना

1. आलोचकों के अनुसार, भारतीय विदेश नीति के निर्माण में अभी भी नौकरशाहों का प्रभाव है तथा विदेश नीति के निर्माण में विशेषज्ञों का अभाव है। राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद् के गठन के बाद भी विदेश नीति के निर्धारण में नौकरशाहों का अधिपत्य स्वाभाविक रूप में देखा जा सकता है।
2. विदेश नीति का निर्माण दीर्घकालिक लक्ष्यों के अनुसार नहीं किया जा रहा है, बल्कि विदेश नीति में तदर्थ अथवा अल्पकालिक निर्णय लिए जा रहे है भारतीय विदेश नीति में सिद्धान्तों का अभाव प्रतीत होता है, जिस प्रकार विदेश नीति के आरम्भ में विभिन्न सिद्धान्तों का निर्माण किया गया था। इसमें गुट निरपेक्ष विदेश नीति का सिद्धान्त प्रमुख है।
3. विदेश नीति पहलकारी न होकर प्रतिक्रियात्मक ज्यादा है। उदाहरण के लिए, चीन के द्वारा अफ्रीकी महाद्वीप के देशो की बैठक बुलाई गई। उसके बाद भारत ने भी अफ्रीकी महाद्वीप के देशों की बैठक का आयोजन किया। चीन के द्वारा प्रशान्त महासागरीय देशों की बैठक बुलाई गई, उसके बाद भारत ने भी इन देशो। की बैठक बुलाने का प्रयास किया। इससे यह प्रतीत होता है कि भारतीय विदेश नीति निर्माता विदेश नीति के मूल लक्ष्यों को निर्धारित करने में विफल रहे है।
4. एक प्रभावशाली विदेश नीति के निर्माण के लिए अर्थव्यवस्था शक्तिशाली होनी चाहिए और भारतीय अर्थव्यवस्था अभी भी कमजोर स्थिति में है। इसलिए भारत पड़ोसी देशों को पर्याप्त सहायता नहीं दे पाया है तथा जिस सहायता का आश्वासन दिया जाता है, उसमे भी अत्यधिक विलम्ब होता है। विदेश नीति के द्वारा जितनी शीघ्रता से निर्णय लिए जाते है, उसे लागू करने में प्रतिबद्धता का अभाव दिखता है और वर्तमान उदारीकरण और निजीकरण के युग में विदेश नीति के निर्धारण में सरकारी लोगो के दबदबे के कारण प्रक्रियाएं जटिल बनाई गई हैं तथा औपचारिकता परिणाम से ज्यादा महत्वपूर्ण बन गई है।
5. भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धों को सामान्य नहीं बना पाया है। आज भी पाकिस्तान, चीन, नेपाल एवं श्रीलंका के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध स्थापित नहीं हो पाये है।

प्रमुख सुझाव

शोधकर्ता द्वारा भारतीय विदेश नीति को ओर अधिक सफल बनाने हेतु निम्न सुझाव दिये गये है :–

1. भारत को अपनी विदेश नीति का मुख्य लक्ष्य राष्ट्रीय हितों की पूर्ति तथा राष्ट्र की अखंडता की रक्षा करना होना चाहिए।
2. भारत को गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में और अधिक सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए ताकि इस आंदोलन की प्रांसगिकता बनी रहे।
3. भारत को सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता की प्राप्ति हेतु और अधिक सक्रिय कुटनीतिक प्रयास करने चाहिए।
4. वैश्वीकरण के वर्तमान युग में आर्थिक कूटनीति पर अधिक ध्यान देना चाहिए।
5. भारत को पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धों को ओर अधिक प्रगाढ़ करना चाहिए।
6. भारत को एशिया और अफ्रीका के विकासशील देशों के साथ मिलकर वैश्विक मुद्दों पर सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।
7. आंतकवाद तथा जलवायु परिवर्तन पर भारत को विकासशील देशों के हित में आवाज उठानी चाहिए।
8. भारत को अपनी विदेश नीति के सन्दर्भ में आंतरिक सुरक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
9. भारत सरकार को प्रवासी भारतीयों को भारत से जोड़ने की नीति अपनानी चाहिए। ताकि वे भारत में अधिक आर्थिक निवेश कर सके।
10. भारत को अपनी विदेश नीति में सांस्कृतिक कूटनीति को भी प्रमुख जगह देनी चाहिए।

निष्कर्ष

भारतीय विदेश नीति मुख्यतः गुट–निरपेक्षता, पंचशील, उपनिवेशवाद का विरोध, संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन, विश्व शान्ति का समर्थन तथा तीसरे विश्व के साथ एकता, अन्तर्राष्ट्रीय आंतकवाद की समाप्ति, उर्जा सुरक्षा तथा इसके लिए नागरिक परमाणु ऊर्जा सहयोग स्थापित करने की नीति पहले आदि आठ प्रमुख सिद्धान्तों पर आधारित रही है। इन सभी सिद्धान्तों ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में भारत को अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता प्रदान की है।

उपरोक्त सिद्धान्तों के साथ आज भारतीय विदेश नीति विश्व राजनीति में अत्यन्त सक्रियता से कार्य कर रही है। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने लगभग 35 देशों की यात्राएं की हैं, कई अन्तराष्ट्रीय सम्मेलनों में तथा संयुक्त राष्ट्र महासभा के दो सम्मेलनों में भागीदारी की है तथा अनेक विदेश के नेताओं ने भारत की यात्राएं की हैं। इन सब ने यह दिखाया है कि विश्व राजनीति में भारतीय कूटनीति तथा शिखर कूटनीति अत्यन्त सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। ऐसा समझा जाता है कि वर्ष 2025 तक भारत विश्व में एक महाशक्ति के रूप में उभर कर सामने आएगा और इससे पहले ही भारत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की स्थाई सदस्यता प्राप्त कर लेगा। भारतीय विदेश नीति समकालीन समय में इस सम्भावित भूमिका को निभाने की पूर्ण तैयारी कर रही है। भारतीय राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय हितो की सुरक्षा के लिए भारतीय विदेश नीति अधिक से अधिक सक्रियता के साथ सकारात्मक भूमिका निभाने के लिए निरन्तर प्रयास कर रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

खन्ना, वी. एन., अरोडा, लिपाक्षी, भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली, 2007.

पन्त, पुष्पेश, भारत की विदेश नीति, मैकग्रॉहिल एजुकेशन, दिल्ली, 2010

यादव, आर. एस., भारत की विदेश नीति, पियर्सन एजुकेशन इण्डिया, दिल्ली, 2013

बिस्वाल, तपन, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, द ऑरियंट ब्लैकस्वान, दिल्ली, 2016

दीक्षित, जे. एन., सिंह रहीम, भारतीय विदेश नीति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2018

खन्ना वी.एन., कुमार के लेस्ली, फॉरेन पॉलिसी ऑफ इण्डिया, विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2018